श्री:। भरतपुर २४-९-५८

अनन्त श्री विभूषित "श्री" पाद पद्मों में कोटिश:
प्रणाम स्वीकृत हों। सर्वत: कुशल मस्तु। श्री जैन सा०
गत कल सायं जनता से सूरत गये हैं अत: यदि सूरत
देखने का विचार हो तो उन्हें सूचित करदें ताकि वे
स्टेशन पर आजोंय। मैं संभवत: आज अथवा कल
जैपुर मोटर के लिये जारहा हूँ। शेष कृपा।

आपका दासानुदास

गोविन्द.

पत्र कर दिये हैं संभवत: डाक में गड बड है
ऐसा प्रतीत होता है एक तो एक्स प्रेस
भेजा था।

पहुँच सकते + श्री राजपुरोहित जी का वारण्ट है वह भी यहां से भागे हुए हैं यहां की परिस्थिति बिगड़ती ही जारही है दिन से यह अफवाह यहां जोरों पर है कि इसराज्य में गैर जाट नहीं बस सकेंगे देखिये क्या होता है गत कल श्री १.५ मातृ H. H. से मिले थे उनके साथ भी अच्छा व्यवहार नहीं किया खान पान आदि बन्द है कोई चिन्ता नहीं जगदम्बा यह सब मंगल के लिये ही कररही है। आप हमसब की ओर से निश्चिन्त रहें यह तो समाचार ज्ञान के लिए ही मैंने लिखा है न कि किसी चिन्ता में फंसने को। श्री स्वाध्याय के लिये क्या निश्चित रहा श्री चन्द्रदेव जी को भी आज लिखूंगा समय तो बड़ा कठिनतर प्रतीत होता है आज रेडियो पर मैंने स्वयं सुना है कि मि. लि. आ० जिन्नाने अन्य देशों से सहायतार्थ सेना याचना की है और वर्तमान नियम ने इसके लिये सब को सूचित करदिया है। अभी रङ्गापुर से ब्र. चा. नित्यानन्द जी का पत्र आया है वहां से भी मुसुर पालाव प्रयाण कर रहे हैं आर्यों में कोई बात नहीं है आज पत्र में भी श्री मातृ माताजी ने वही कहा खुशी व्यक्त किया है कुशल पत्र अवश्य मांगा है / अपराध क्षमा पत्रोत्तर शीघ्र
शेष आगामी पत्र में लिखूंगा। श्री काका जी श्री मनोहर जी श्री चानेश्वर जी (
[illegible]

ने गुसालिया अब सेहत है ~ पू. पं.

श्री पू. चा. श्री ५.५ मती - मान्
आदि सब को सादर साष्टांग
प्रणाम स्वीकार हो।

सादर प्रणाम

आपका।

चरणानुचर:

श्रीमान् - इन्जनीयर साहब बाद
जैजै राम जी जय शंकर
सब अपने हृदय से ही
मेरे भी आनन्द

आपका

[illegible]

और आप [illegible]

पत्र मिलने के कारण [illegible] बनाया है

श्रीः। भरतपुर भाद्रपद शुक्ला १२ रवौ
सं० २००४

अनन्त श्री

सर्वतंत्र स्वतंत्र पूज्यपाद श्री बाबा महाराज के पुनीत पाद पद्मों में चरणानुचर गोविन्द के कोटिशः प्रणाम स्वीकृत हों। सर्वतः कुशलमस्तु श्री चरणानुकम्पा से गीताश्रम से चलकर सुख पूर्वक हृषीकेश स्टेशन पर मैं और श्रीमान् ला० बाँकेलालजी गाड़ी में सवार हुए हरिद्वार जंक्शन पर श्री ब्रह्मचारी भी मिलगये वहां से लक्सर होते हुए सहारनपुर पँहुचे यहां से लाला बाँकेलालजी लारी मोटर के लिये चले गये अब तक कोई कुशल पत्र नहीं मिला है आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि सुख पूर्वक घर पँहुच गये होंगे अस्तु स० पु० स्टेशन पर से यात्रियों को तो क्या वहां के भृत्यादिकों को भी विशूचीयों की ट्रेन आ रही थी इस भय से बाहर निकाल दिया गया मध्या-नोत्तर ३।।-४ के अनुमान देहली ट्रेन आई और टिकिट लेकर उसमें २।।-३ घंटे वहीं बैठे रहे तब कहीं वहां से गाड़ी चली आगे हर स्टेशन पर यात्रियों के लिये बड़ी भारी सुविधा थी प्रत्येक स्टेशनों पर कहीं रोटी साग तो कहीं पूड़ी हलुवा चाय बिस्कुट दूध मक्का चना आदि से सब प्रकार मेरठ तक खूब अच्छी तरह स्वागत होता आया आगे देहली तक भी साधारण तया यह सब चलता रहा गाजियाबाद से एक स्टेशन पूर्व ही पुनः ट्रेन ३ घंटे खड़ी रही यतः उस समय देहली पर असुर स्थानी ट्रेन लूटी जा रही थी वैसे डाँके होते हुए भी हमारी ट्रेन छोटे से छोटे से स्टेशन का स्वागत स्वीकार के बिना नहीं चली हरजगह १०-१५-२०-२५-३० मि० तक यथावश्यक समय देती हुई आराम से धीरे २ असुर सेना [illegible] करती हुई ३ बजकर ५० मि० रात को देहली आई

यहां उतर स्नान पाठ से निवृत्त ही हुआ था कि कर्फ्यू खुलने की घंटी (हौरन)
बजी मैं झट से के. डी. के घर पहुंचा भोजन बनवाकर श्री ब्र. चा. और भोजन लेकर
[illegible] स्टेशन वापिस आया हो जिस समय देहली स्टेशन उतरा उस समय का
दृश्य भी कुछ लिखता हूं — स्टेशन पर स्मशान के समान ही सुनसान थी
दुर्गन्धि आ रही थी हजारों लिफाफे कार्ड फटे पड़े थे न कोई बाबू था न कुली
अंधी पीसे कुत्ता खाय — के. डी के घर जाते समय तो मार्ग में कोई नहीं मिला
किन्तु लौटते समय खूब दूकानें लुटी जा रही थीं ताले तोड़े जा रहे थे अक्सर लूटा
भी यत्र तत्र किया जा रहा था एक को तो मेरे देखते २ मुसाफिर खाने में घुसा कर
कर दिया गया इसके बाद कलकत्ता जानेवाली गाड़ी में हम लोग पूर्वियों के १ डिब्बे में
बड़ी भारी प्रार्थना करने पर खड़े रहने मात्र पर घुसने दिया १ घंटे के करीब
गाड़ी में १ पैर से २ नों खड़े रहे गाड़ी न चलने से पुनः उतर कर इधर उधर घूमते रहे
थोड़ी देर में एक ट्रेन पुनः लुटने लगी यथा — कालका अमृतसर
हमारे [illegible] लोग रोने लगे फिर तो प्लेटफार्म पर पड़ा
सामान भी लुटने लगा जिसमें बीड़ी दियासलाई
बनाने के कोरे कार्ड आदि सैकड़ों प्रकार का सामान
स्वच्छन्दता से लोग इधर उधर ले जाने लगे
इसी प्रकार १ घंटा [illegible] वहां का दृश्य देखने के अनन्तर ट्रेन
वहां से चली जिसमें श्री ब्र. चा. जी एक पैसेन्जर के पीछे
के डिब्बे के डंडे पर खड़े आये अभी गाड़ी से आ गये उन्हें प्र.
[illegible] के बदले [illegible] को [illegible] लगा आस आती
[illegible] ही था [illegible] जंक्शन पर हम दोनों

उतर गये वहां १५-२० मि. बाद ही ट्रेन मिल गई और अचलनेरा द्वारा भरतपुर पहुंचने के टिकिट ले गाड़ी में सवार हो चल दिये इधर बिल्कुल शांति थी यहां किसी प्रकार की कोई बात नहीं थी (अब भी यहां शांति ही है) (आज मुसलमान वाले आये है) स्टेशन पर पता चला कि भरतपुर तो कहीं होकर भी कोई ट्रेन नहीं जाती है, अनेकों विचार बनाते जैसे तैसे कुछ एक दिन रहता गाड़ी मथुरा स्टेशन आकर पहुंची तो गाड़ी में से ही मुझे दीखने लगा कि भरतपुर जाने के लिये एक्स प्रेस तयार खड़ी है उतर कर गाड़ी में सवार हो १ घंटे बाद वहां से गाड़ी भरतपुर की ओर चली। इधर की चर्चाओं का जोर कानों में आने लगा कि वहां तो खूब असुर संहार हो रहा है जैसे तैसे आध घंटे में ही भरतपुर आ पहुंचे और ६-७ सवारियां ही हम गाड़ी से उतरने वाले थे समय सायं ७ का होगा स्टेशन पर ही समाचार मिले कि खूब काली ने आक्रमण पान किया है और करंगी ... इत्यादि बाहर खड़े मिले १ में सवार हो लक्ष्मण जी उतर बासन दरवाजे जैसा पूरब स्टेशन पर (पू. प.

सहारनपुर से देहली तक होता आया था यहां भी
पूछा गया कि क्या कोई है अस्तु जैसे तैसे रामकोट
पहुंचे और देखते ही लोग श्री चा. श्री. को काटने लगे कि जब ऐसा (से लड़ने —)
होता है तभी आप चले जाते हैं इत्यादि भरतपुर भयावना दीख रहा था चारो ओर
लुटेरे वीरों के अड्डे जमे हुए थे कमीश्नरों की आवाज भी सुनाई आने
लगी चावजे घर भोजनादिक सोया दूसरे दिन २-४ अग्निकांड भी
नगर में पत्र ~~मत्र~~ हुए और लूट भी दिन दहाड़े हुई पवन यहां से दुकाने भी
भगा दिये और अब यहां नाम को भी नहीं है (और अब राज्य में कहीं नहीं है) हां जो ४-५ सौ
शुद्ध होगये हैं वह अवश्य हैं। श्री चुन्नीलालजी आर्कियानन्द
का शरीरान्त गत अमावस्या को होगया है। ~~[illegible]~~ दूसरे
दिन से ही ज्वर ने खूब अच्छी तरह जकड़ लिया था आज ही
~~[illegible]~~ किया है कि तपरसों से ही छोड़ा है इन दिनों कमसे कम हजार
डेढ़ हजार तो ~~वमन~~ वमन हुई अबकी बार इसने भी खूब अच्छी मरम्मत
करदी है इतने दिनों अनशन ही रहा है १ छू वस्तु भी पच ही
नहीं सकती थी पाठ जैसे तैसे आपकी चरण कृपा से बन्द नहीं हुआ
अब कोई बात नहीं है विशेष क्या लिखूं यह प्रसाद तो सब चण्डी का
ही है भोजन तो उस दिन से अब (तक) किया ही नहीं है, नहीं तो हलुआ
बनवा कर बाबूजी रामजी से भोग लगवा देना, जैसी इच्छा।
अब चरण कृपा है आशा है शीघ्र स्वास्थ्य लाभ करूंगा
श्री कस्तूरीलालजी (का) पत्र (यथावि) रुग्णावस्था में आया था व्याकुल थे
उनके पत्र का उत्तर मैं दूसरे दिन ही डाक से भेज चुका हूं
पुनरपि आज सायंकाल दूसरा पत्र उनका आया है कि

+ आपका कृपा पत्र नहीं आया और आपके दर्शनों के लिये अतीव उत्सुक हूं क्या करूं कहीं +
पता पूछकर भाग नहीं लगा सकता और सेवा करने में हमें उदासीन रहते तो नहीं जा सकता हूं

४

श्री पूज्य पाद गुरु जी के चरणों में अनेकशः प्रणाम
आप का स्वास्थ्य कमजोर चलरहा है इसका पता सोहन
से मिला उन्होंने ही मैने देहली का एड्रेस मंगवाया
था तो ऐड्रेस आज ही मिला उससे मेरा स्वास्थ्य भी ठीक
नहीं चलरहा देहली में ही दर्शन करने की इच्छा थी पूज्य
करजाता दर्शन भी लगा चाहताहूं आप [illegible] यहां सुभा
...जी के यहां ठहरेंगें ताकि स्वास्थ्य ठीक होनेपर दर्शन करने आऊं

श्री: । भरतपुर द्वि. आ. कृ. १२ वीं
सं० २००४

अनन्त श्री पूज्यपाद बाबा महाराज के पुनीत पाद पद्मों में
कोटिशः प्रणाम स्वीकृत हों। सर्वतः कुशल मस्तु। पत्र मिला –
समाचार यह है कि अभी तक उनका कोई पता नहीं यहां राज्य से
खान पान बंद करने के आर्डर होगये हैं और वारंट भी निकल चुका
है सुना गया है कि मदोन्मत्त दशा में २-४- गुण्डों को लेकर
खैरेरा वालों के यहां गये और उनकी एक विधवा लड़की से
बलात्कार करने की सोची इस लड़की का पिता आब्र वकील
अभी थोड़े दिन से है इसने उपर्युक्त समाचार का पत्र
१ दीवान और १ नरेश को दिया है यह दोषा रोपण किया
बतलाते हैं। अभी से इस बारे में कोई बातें नहीं हुई शायद
वह इसी भय से यहां से भाग निकले। सुना जाता है कि दीवान
और महाराज ने उनको जाने से २-४ दिन पूर्व इस बात पर
डाटा है। कहा नहीं जा सकता कि इसमें सत्य क्या है
और बना कर कितनी है। वर्तमान आब्र वकील पहिले बरखा-
स्त शुदा है शायद इसी प्रपंच के लिये इसे जगह दी हो।
नाथ। कुछ नहीं सूझता है क्या करूं कभी २ धैर्य भी
साथ छोड़ बैठता है मेरी दशा शोचनीय हो रही है
पाठ कल १०० होंगे आगे होमा ऽ भाव के २० करने
हैं। रक्षा करो देव। और अब मैं किसको लिखूं
और क्या करूं पत्र जल्दी देते रहा करिये इससे
बड़ा सहारा मिलता है शेष फिर आपका।

अपनाया हुआ